शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

विज्ञापन कला के क्षेत्र में ग्राफिक डिजाइन की भूमिका एवं बढ़ती उपयोगिता

प्राप्तिः 21.11.2023
स्वीकृतः 22.12.2023

अनुपमा ठाकुर
शोधार्थी
जे०वी०जैन डिग्री कॉलेज, सहारनपुर
ईमेलः *anu.tomer196@gmail.com*

96

सारांश

डिजाइन एक प्रक्रिया है, जिसमें कोई भी कलाकार अथवा प्रयोक्ता अपनी आवश्यकताओं के आधार पर अपने आस–पास की प्राकृतिक सामग्री को पुनर्स्थापित कर इस प्रकार व्यवस्थित करता है कि वह उसके उद्देश्यों की पूर्ति करें तथा एक नवीन रूप में सौन्दर्यजनक बन जाये जैसे प्राचीन समय से वर्तमान तक घरों, कपडों, गाड़ियों आदि में होने वाले बदलाव डिजाइन के बढ़ते प्रयोग के कारण सम्भव हुआ है। डिजाइन का कला के क्षेत्र में भी प्रयोग बढ़ता जा रहा है, समसामयिक कला में मल्टी मीडिया के बढ़ते प्रयोग ने कला के क्षेत्र में पारम्परिक रूढ़िवादिता तथा बन्धनों को तोड़ा है, जिससे कला में अनेक नवीन प्रयोग हो रहे हैं। समकालीन चित्रकार न केवल अनेक माध्यमों का प्रयोग कला में कर रहे हैं, अपितु वीडियो इन्सटॉलेशन, ग्राफिक डिजाइन, फोटोग्राफी आदि का भी प्रयोग बढ़ता जा रहा है। ग्राफिक डिजाइन का इतिहास लिपि के जन्म के साथ ही प्रारम्भ हो गया था। प्राचीन सभ्यताओं में व्यक्ति चित्रात्मक लिपि का प्रयोग करता था जिसमें प्रतीकों का प्रयोग कर अपनी बात समझायी जाती थी। सर्वप्रथम सुमेर के निवासियों ने 3100 ई0पू0 में चित्रात्मक लिपि का प्रयोग किया था। लिपि के बाद अक्षरों का जन्म हुआ। मुद्रण का अविष्कार मानव द्वारा दृश्य सम्प्रेषण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अविष्कार था। लोगों की मनोवृत्ति में बदलाव के कारण ग्राफिक डिजाइन को भी बढ़ावा मिला। औद्योगीकृत समाज की प्रगति व आपसी सम्प्रेषण की बढ़ती मांग के कारण मुद्रकों, विज्ञापनों व पोस्टरों की अधिक आवश्यकता पड़ने लगी। यह परिवर्तन वर्तमान समय तक भी जारी है। समकालीन कला में भी औद्योगीकरण के समान डिजाइन, मुद्रण, विज्ञापन कला आदि का समावेश प्रचुर मात्रा में है। इस समय अनेक ऐसे चित्रकार कार्यरत हैं जो इन्हीं नवीन परम्पराओं का समावेश कर कला सृजन कर रहे हैं। विज्ञापन के क्षेत्र में ग्राफिक डिजाइन अत्यन्त आवश्यक है। कोई भी ब्रांड अपने उत्पाद की गुणवत्ता विश्वसनीयता को दर्शकों के समक्ष प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने के लिए सुनियोजित तथा गुणवत्तापूर्ण विज्ञापन का निर्माण करता है। एक ग्राफिक डिजाइनर बाजार के अनुसार शोध पूर्ण डिजाइन बनाकर उत्पाद हेतु विज्ञापन की रूपरेखा तैयार करता है।

मुख्य बिन्दु

ग्राफिक डिजाइन, विज्ञापन कला का इतिहास, कम्प्यूटर का प्रयोग, ग्राफिक डिजाइनर।

सम्प्रेषण व्यक्ति का गुण है तथा यह अभिव्यक्ति हेतु प्रयुक्त सर्वाधिक प्रचलित माध्यम है, परन्तु इसकी भी सीमाएँ हैं। कुछ सम्प्रेषण दृश्य माध्यम में अधिक उपयुक्त होते है, जिस हेतु कला का प्रयोग किया जाता है। आदिकाल से ही मानव सम्प्रेषण के लिए कला का प्रयोग करता रहा है। सभ्यता व संस्कृति के विकास के साथ–साथ मानव सम्प्रेषण के माध्यम भी बढते चले गये। व्यक्ति जैसे–जैसे प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है, दुनिया छोटी हो रही है। अब व्यक्ति दूर बैठे व्यक्ति तक भी अपने विचार आसानी से पहुँचा सकता है। कला के मुख्यतः दो भाग हैं– दृश्यकला तथा व्यवहारिक कला। आम जन कला के प्रथम स्वरूप को तो जानते हैं। किन्तु व्यवहारिक कला से प्रायः अनभिज्ञ ही रह जाते हैं। यह कला का वह रूप है जिसमें कला व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भौतिक वस्तुओं को प्रस्तुत करती है। इसका एक निश्चित उद्देश्य होता है औद्योगीकरण के साथ–साथ व्यवहारिक कला का महत्व दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। व्यवहारिक कला का प्रमुख उद्देश्य संदेशों का सम्प्रेषण होता है जो अनेक माध्यमों जैसे कम्प्यूटर मेल, वेबसाइट, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, मीडिया आदि के द्वारा किया जाता है। इन्ही संदेशों को बनाने तथा सम्प्रेषण को सरल बनाने की प्रक्रिया को ग्राफिक डिजाइन कहा जाता है। साधारण भाषा में ग्राफिक डिजाइन से तात्पर्य किसी भी प्रकार के उत्पादों अथवा सेवाओं के सृजन हेतु बनाये गये आलेख से होता है, जैसे – समाचार पत्र, पोस्टर, होर्डिंग, बैनर, पत्रिकाऐं, कलेण्डर, वेबसाइट आदि। ग्राफिक डिजाइन में शब्दों व चित्रों का संयोजन होता है। इसका शाब्दिक अर्थ जानने के लिए इसका अवतरण जानना जरूरी है। ग्राफिक शब्द ग्रीक भाषा के शब्द ग्राफीन से बना है, जिसका अर्थ है लिखाई या चित्रण।

ग्राफिक डिजाइन के मुख्यतः तीन चरण हैं –

1. उत्पाद का चयन कर उसके गुण, प्रतीक चिन्ह, पैकेजिंग, लोगो आदि का पता करना। यह डिजाइन को उत्पाद के गुणों को जानने तथा उसके गुणों के अनुसार कार्य करने का चरण है।
2. उत्पाद चयन के बाद, उस उत्पाद के समान अन्य उत्पादों के साथ उसकी तुलनात्मक सूचनाएँ इकट्ठा करना, उसके उपयोग हेतु जानकारी प्रदान करने का द्वितीय चरण है।
3. ग्राफिक डिजाइन का तीसरा चरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह है उत्पाद का प्रस्तुतीकरण। इस हेतु विज्ञापन निर्माण इस प्रकार से करना कि वह उस उत्पाद को आकर्शित तथा प्रयोगकारी बना दें।

ग्राफिक डिजाइन को परिभाषित करते हुए बिल बुर्टिन ने कहा है '''ग्राफिक डिजाइन का कार्य सम्प्रेषण में सहयोग के लिए एक प्रकार से विचारों या समस्याओं को संक्षिप्त और सार रूप में करना है, ताकि उन्हें आसानी से समझा जा सके।

ग्राफिक डिजाइन का प्रारम्भ औद्योगिक क्रान्ति के साथ–साथ हुआ। सन् 1477 में विलियम कैक्सटोन द्वारा पहला प्रतीक चिन्ह अंग्रेजी भाषा में मुद्रित किया गया था। 17वीं शती ग्राफिक डिजाइन के विकास हेतु महत्वपूर्ण समय था। इस समय तक पूरे यूरोप में लकड़ी के स्थान पर तांबे द्वारा उत्कीर्णन कर पुस्तकों के मुद्रण का कार्य किया जा रहा था। इसी प्रकार की मुद्रण विधि का प्रयोग विभिन्न लेखकों की पुस्तकों के प्रकाशन हेतु किया जाता था। 17वीं शती के अन्त में फ्रांस के राजा लुइस 14वें ने मुद्रण कला के विकास में रूचि दिखाई तथा नई प्रकार की टाइपोग्राफी के विकास हेतु विद्वानों की समिति का गठन किया तथा अंग्रेजी के बड़े अक्षरों की संरचना हेतु एक वर्ग

को 64 इकाइयों में वर्गीकृत कर तथा प्रत्येक इकाई को भी 36 वर्गो में विभाजित कर अक्षरों की एक प्लेट तैयार की गयी। इस प्रकार सन् 1695 में तांबे की इस प्लेट के द्वारा अक्षरों का नया ग्राफिक मानक तैयार किया गया। 1760 से 1840 के मध्य औद्योगिक क्रान्ति के कारण लोगों की मनोवृत्ति में आये बदलाव के कारण ग्राफिक डिजाइन को बढ़ावा मिला। जेम्स वाट द्वारा 1780 में भाप का इंजन का अविष्कार किया गया, जिससे लोगों को औद्योगिक सहायता भी प्राप्त हुई। अपने उद्योगों की उन्नति हेतु लोग सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में मुद्रण, विज्ञापन, पोस्टर आदि का प्रयोग अधिक करने लगे। उत्पाद के विज्ञापन हेतु बड़े–बड़े बिलबोर्ड बनाये जाते, इसके लिए बोर्ड डिसप्ले लैटर की आवश्यकता हुई। अतः टाइपोग्राफी में तीव्रता से बदलाव होने लगे। टाइप्रोग्राफी में मोटे अक्षरों का प्रयोग अंग्रेजी के छोटे व बड़े अक्षरों का मिश्रण, टाइपफेस का बदलता स्वरूप आदि ग्राफिक डिजाइन के क्षेत्र में होने वाले निरन्तर परिवर्तन थे। समय बीतने के साथ–साथ विज्ञापन में मुद्रण व टाइपोग्राफी की बढ़ती आवश्यकता ने विद्वानों को इसके प्रयोग को सरल बनाने हेतु कार्य करने के लिए प्रेरित किया। जिसके फलस्वरूप 1804 में एक जर्मन मुद्रक फ्रेडरिक कोइंग लन्दन गये और अन्य विद्वानों के समक्ष भाप से चलने वाली मुद्रण मशीन की योजना प्रस्तुत की। जल्दी ही इस मशीन के निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो गया। यह मशीन मुद्रण कार्य सरलता से तथा अधिक मात्रा में कर लेती थी। यह मशीन समय के साथ–साथ अधिक परिष्कृत तथा उपयोगी बनती गयी। 1827 में विलियम कॉपर ने इस मशीन की क्षमता कई गुना बढ़ाकर जिस नई मशीन का अविष्कार किया वह मुद्रण कार्य एक घंटे में चार हजार कागज कर सकती थी, इस प्रकार लगभग 450 वर्षों तक मुद्रण का कार्य हाथ से करने के पश्चात् 19वीं सदी में मुद्रण की तकनीक का तेजी से विकास हुआ तथा 1887 में मोनोटाइप मशीन का अविष्कार हुआ। मुद्रण के अतिरिक्त फोटोग्राफी के विकास के साथ विज्ञापन में इसका प्रयोग भी बढ़ गया था। जोसफ निप्से द्वारा सर्वप्रथम प्रकाश द्वारा स्थाई चित्र का निर्माण 1826 में किया गया तथा 1835 में अंग्रेज विलियम हेनरी फॉक्स टॉल बार ने सबसे पहले फोटोग्राफी निगेटिव तैयार किया। 19वीं शताब्दी में इसका प्रयोग डिजाइन में बढ़ने लगा था। 1910 तक हुए अनेक अविष्कार जैसे टाइपराइटर, रंगीन मुद्रण, रंगीन फोटोग्राफी, एनीमेशन कार्टून आदि के बढ़ते प्रयोग ने दृश्य सम्प्रेषण को बढ़ाकर ग्राफिक डिजाइन के क्षेत्र में नवीन एवं क्रान्तिकारी प्रगति की। 20वीं शती के आरम्भ तक यह प्रक्रिया इतनी विकसित हो गयी कि ग्राफिक डिजाइन के लिए फोटोग्राफी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया बन गयी। ब्रिटेन का आर्ट व क्राफ्ट आन्दोलन 1870 के दशक में विज्ञापन उद्योग में अमानवीय स्थितियों के विरोध स्वरूप उत्पन्न हुआ। इसमें विलियम मोरिस एक निर्णायक के रूप में प्रसिद्ध हुए। इस आन्दोलन के कार्यों, मनोवृत्तियों तथा मूल्यों के प्रभाव तत्कालीन ग्राफिक डिजाइनरों पर पड़ा जो वर्तमान में भी ग्राफिक डिजाइन में सम्मिलित हैं। 19वीं शती में ग्राफिक डिजाइन में निज नवीन परिवर्तन होते रहे जो तत्कालीन औद्योगिक परिवर्तन के कारण हो रहे थे। 1890 से 1930 के मध्य पेरिस में एक नवीन शैली का जन्म हुआ। यह डिजाइन की सजावटी शैली थी जिसे नुओं कला कहा गया। 20वीं सदी के प्रथम तीन दशकों के दौरान सभी विज्ञापनों, बैनर, पुस्तकों आदि में एक सौन्दर्यपूर्ण सजावट व रोमानी नजरिया अभिव्यक्त होता था। 20वी शती के बाद के वर्षो में चित्रकार चार्ल्स रेनी उनकी पत्नी मार्गरेट तथा पीटर बेहरेन्स ग्राफिक डिजाइन हेतु नवीन शैली लाये जो नुओ कला का सरल एवं परिष्कृत रूप था, जिसमें समानान्तर व सशक्त रेखाओ को अधिक महत्व दिया। 19वीं सदी के अन्त में, दस्तकारी और नुओं कला की अधिक सजावटी शैली के गिरते हुए मानकों की प्रतिक्रिया स्वरूप इनका प्रयोग छोड़कर कलाकार नवीन प्रयोगों में लग गये।

आधुनिकवाद में ग्राफिक डिजाइन पर भविष्यवादी, घनवादी तथा दादावादी शैली का प्रभाव पड़ा। धनवाद का प्रारम्भ पाब्लों पिकासी द्वारा 1906 में फ्रांस में किया गया था। इस समय टाइपोग्राफी में परम्परागत ले आउट को स्वीकार नहीं किया गया तथा नई शैली के नये नियमों के अनुसार वास्तविकता व दृष्टिभ्रम के मध्य की स्थिति को अपनाया गया। भविष्यवादी विचारधारा का प्रारम्भ इटली के कवि फिलिप्पों मोरिनेत्री तथा इसका विकास डिजाइनर चित्रकार फोरटनाटो द्वारा किया गया। भविष्यवाद में मुद्रण की भावाभिव्यक्ति के समय उसकी क्षीणता को दूर किया गया तथा सौन्दर्यबोध बढ़ाने हेतु प्रयास किया यह काल ग्राफिक डिजाइन के लिए महत्वपूर्ण था क्योंकि इस समय मुद्रित पृष्ठ के ले–आउट की वर्षों पुरानी एकरूपता को समाप्त कर दादावादी टाइपोग्राफी को प्रारम्भ किया गया। 1917 में कवियों के एक समूह द्वारा सर्वप्रथम दादावाद को वर्णित किया गया जहाँ एक नकारवादी व अराजक दृष्टिकोण था। यह मुख्यतः साहित्य दृश्य कला के क्षेत्र में एक आन्दोलनात्मक दृष्टिकोण था। दादा का कोई शाब्दिक अर्थ नहीं है। इसका नाम फ्रेन्च व जर्मन शब्द कोश का मिश्रित रूप है। इस समय के डिजाइनरों द्वारा मोटे व सटीक शब्द हिब्रू अक्षर, फ्रेंच में लिखे वाक्य तथा चित्रों को मिलाकर एक कोलाज द्वारा डिजाइन बनाना उस समय की मुख्य विशेषता थी। दादावादी चित्रकारों द्वारा 1941 में अतियथार्थवाद प्रारम्भ किया गया। सल्वाडोर डाली, मैक्स अर्नस्ट आदि इसके प्रमुख डिजाइनर व चित्रकार थे। अतियथार्थवाद सिग्मंड फ्रायड के मनोविश्लेषण द्वारा ही प्रभावित हैं। 1917 में रूसी क्रान्ति के समय अनेक कलाकारों व चित्रकारों ने सामाजिक दृष्टिकोण अपनाया। इस वाद में मुद्रण में लियोग्राफी, फोटोग्राफी कोलाज, आदि सभी को साथ में लेकर प्रयोग किया गया। 20वीं सदी में तकनीकी रूप से समृद्धता बढती गयी इसका प्रभाव मुख्यतः ग्राफिक डिजाइन पर भी पडा। इनेक्ट्रोनिक तकनीकी विशेषकर कम्प्यूटर के अविष्कार ने इस क्षेत्र को समृद्ध एवं सरल बना दिया था। इस समय भी दादावाद व 18वीं शती को प्रतिष्ठित टाइपोग्राफी के प्रभाव को आत्मसात कर इनसे प्रेरणा प्राप्त की गई। 1960 के दशक में फोटोग्राफी व कोलाज के साथ संयोगिक ग्राफिक प्रतिरूप बनाना प्रारम्भ किया। वहीं 1970 व 1980 के दशकों में विद्युतीय माध्यम व सुदृढ़ संचालन का प्रयोग कर ग्राफिक डिजाइन की नई शैली विकसित की गई। इस समय से इस क्षेत्र में महिलाओं का भी प्रभाव दिखने लगा। इस समय की महान डिजाइनर एप्रिल ग्रीमेन थी जो अपनी लोकप्रिय आकृति के संयोग हेतु प्रसिद्ध रही। इन्होंने फोटोग्राफर जयमें आगेर के साथ रंगीन कोलाज का निर्माण किया। 1984 ई. में कम्प्यूटर ग्राफिक्स का आरम्भ करने का श्रेय मैकन्तोष को प्राप्त है। इस क्रान्ति के समर्थन हेतु Macwrite, Macdraw, Graphic Software आदि की भरपूर सहायता प्राप्त हुई। 20वीं शती के अन्त तक ग्राफिक डिजाइन वीडियो कम्प्यूटर, इन्टरनेट, आदि से समृद्ध हो चुका था।

विज्ञापन के क्षेत्र में ग्राफिक डिजाइन का प्रयोग

आधुनिक काल तकनीकी समृद्धता का समय है। इस समय प्रत्येक उत्पाद के क्रय हेतु उक्त उत्पाद के गुण व विशेषताओं का आम जन तक पहुंचना अत्यन्त आवश्यक है तथा इसी कार्य हेतु विज्ञापन का निर्माण किया जाता है। विज्ञापन एक निश्चित समय सीमा में प्रस्तुत वह योजना है जो उत्पाद की आवश्यकता को दिखाती है। यह वीडियो, बैनर, बोर्डिंग बोर्ड आदि विभिन्न माध्यमों के द्वारा सम्भव है। आज के समय विज्ञापन निर्माण हेतु बनने वाले ग्राफिक्स हेतु कम्प्यूटर का प्रयोग प्रचलित है। कम्प्यूटर के प्रयोग ने ग्राफिक्स डिजाइन प्रक्रिया को सरल व तीव्र बना दिया है।

कम्प्यूटर डी.टी.पी. अर्थात Desk Top Publishing द्वारा दृश्य विज्ञापन के सष्जन व प्रकाश में सरलता आयी है। यह कार्य एक ही मेज पर ग्राफिक के सृजन तथा प्रकाशन प्रणाली से सम्बन्धित है। कम्प्यूटर द्वारा बनाये ग्राफिक्स कम समय तथा कम लागत में अधिक सुन्दर व सरलता से प्राप्त किये जा सकते हैं।

आज के प्रतिस्पर्धी समय में एक प्रभावी विज्ञापन के माध्यम से ही ग्राहकों का ध्यान आकर्शित किया जा सकता है। इस हेतु ग्राफिक डिजाइनर एक सम्मोहक विज्ञापन के निर्माण में महत्वपूर्ण कार्य करता है जो किसी भी ब्रांड के गुणों, संदेशों व उसकी आवश्यकता को दर्शकों तक पहुंचा सकता है। एक ऐसा विज्ञापन जो आकर्शक रंगो, दृश्य योजनाओं और टाइपोग्राफी का प्रयोग कर प्रस्तुत किया जाता है, दर्शकों पर अधिक प्रभाव डालता है तथा उनका ध्यान तुरन्त आकर्शित कर सकता है। एक मजबूत डिजाइन किसी भी उत्पाद के व्यक्तित्व व मूल्यों को सही ढंग से व्यक्त कर सकता है जिससे उपभोक्ता पर उसका प्रथम प्रभाव ही अच्छा पड़ता है। ग्राफिक डिजाइन के उपयोग से उपभोक्ता व उत्पादक के मध्य एक प्रभावी संचार होता है क्योंकि आधुनिक प्रतिस्पर्धा में विजयी होने के लिए यह आवश्यक है कि उत्पाद को अलग तथा प्रभावकारी दिखाया जाये। एक अच्छे प्रकार से डिजाइन के रंग, गुण का सम्बन्धित ब्रांड की पहचान बना देता है जैसे विभिन्न पेय पदार्थों के विज्ञापन में उनमें लिखी टाइपोग्राफी उनके प्रस्तुतीकरण की पहचान बन जाती है। एक अच्छे डिजाइन से उपभोक्ता–उत्पादन के मध्य विश्वास कायम होता है। एक पेशेवर और अच्छी प्रकार से निष्पादित डिजाइन किसी भी ब्रांड को उपभोक्ता के समक्ष अधिक भरोसेमंद व विश्वसनीय बनाता है। किसी विज्ञापन का दृश्य वीडियो अथवा विजुअल स्टोरी टेलिंग विज्ञापन उपभोक्ताओं के साथ जुड़ने व ब्रांड के संदेश को सम्प्रेषित करने का प्रभावकारी तरीका है।

अतः ग्राफिक डिजाइन की सम्पूर्ण कार्य प्रणाली उसका विज्ञापन के क्षेत्र में प्रयोग द्वारा यह कहा जा सकता है कि आधुनिक समय जब छोटे से ब्रश से लेकर महंगी गाड़ियों तक सभी के प्रचार–प्रसार हेतु विज्ञापनों का प्रयोग किया जाता है चाहे वह विज्ञापन बैनर के रूप में हो अथवा वीडियो के रूप में एक अच्छे प्रकार से प्रस्तुत किया गया तथा ग्राफिक्स डिजाइन के आयामों से पूर्ण विज्ञापन सम्बन्धित उत्पादकों–उपभोक्ता के समक्ष उत्कृष्ट, विश्वसीय तथा योग्य बनाता है। ब्रांड की पहचान, विश्वसनीयता प्रभावी सम्प्रेषण तथा प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने हेतु एक प्रभावशाली विज्ञापन आवश्यक होता है। इसके लिए आवश्यक है कि उत्पादक गुणवत्तापूर्ण ग्राफिक डिजाइन में निवेश करें।

संदर्भ

1. यादव, नरेन्द्र सिंह. (2014). ग्राफिक डिजाइन. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमीः जयपुर।
2. David Gareth Beginners Guide to Graphic Design.
3. Muller, Jens., Wiedemam, Julius. (1939). The history of Graphic Design. Taschen Newyork worlds fair.

Internet Sources :-

1. www Linkedin.com. The Role of Graphic Design in Advertising.
2. https://www.seodiscovery.com. blog Graphic Design and Its importance for Advertising.